CBSE Test Paper 01

अपठित गद्यांश

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   किसी भी जीव के शरीर और मानस के सबसे ऊपर मस्तिष्क है। इस मस्तिष्क का स्वभाव कैसे तय होता है? बुद्धि में होने वाले विचार से तय होता है इसका मतलब यह है कि किसी भी व्यक्ति के वंशानुगत स्वभाव को उसकी बुद्धि, उसका विवेक बदल सकता है। इसका मतलब यह है कि हमारे बर्ताव, हमारे कर्म पर हमारा वश है चाहे दुनिया भर पर न भी हो। हम अपने स्वभाव को अपनी बुद्धि में बारीक बदलाव लाकर बदल सकते हैं इसके लिए मस्तिष्क की रूप रेखा पर एक नजर दौड़ानी होगी।

   हमारे मस्तिष्क के दो विभिन्न अंश हैं: चेतन और अवचेतन। दोनों ही अलग-अलग प्रयोजनों के लिए जिम्मेदार हैं और दोनों के सीखने के तरीके भी अलग-अलग हैं। मस्तिष्क का चेतन भाग हमें विशिष्ट बनाता है, वही हमारी विशिष्टता है। इसकी वजह से एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से अलग होता है। हमारा कुछ अलग-सा स्वभाव, हमारी कुछ अनोखी सृजनात्मक शक्ति । ये सब मस्तिष्क के इसी हिस्से से संचालित होती हैं, तय होती हैं। हर व्यक्ति की चेतन रचनात्मकता ही उसकी मनोकामना, उसकी इच्छा और महत्त्वाकांक्षा तय करती है।

   इसके विपरीत मस्तिष्क का अवचेतन हिस्सा एक ताकतवर प्रतिश्रुति यंत्र जैसा ही है। यह अब तक के रिकॉर्ड किए हुए अनुभव दोहराता रहता है। इसमें रचनात्मकता नहीं होती। यह उन स्वचलित क्रियाओं और उस सहज स्वभाव को नियंत्रित करता है, जो दुहरा-दुहराकर, हमारी आदत का एक हिस्सा बन चुका है। यह जरूरी नहीं है कि अवचेतन दिमाग की आदतें और प्रतिक्रियाएँ हमारी मनोकामनाओं या हमारी पहचान पर आधारित हों । दिमाग का यह हिस्सा अपने जन्म के थोड़े पहले, माँ के पेट में ही सीखना शुरू कर देता है जैसे जीवन के चक्रव्यूह' में उतरने से पहले ही 'अभिमन्यु' पाठ सीखने लगा हो । यहाँ से लेकर सात साल की उम्र तक वे सारे कर्म और आचरण हमारे दिमाग का यह अवचेतन हिस्सा सीख लेता है जो भावी जीवन के लिए मूल आधार हैं।

   i. हम अपने स्वभाव को कैसे परिवर्तित कर सकते हैं?
   ii. हमारे मस्तिष्क के कौन-कौन से अंश होते हैं?
   iii. मस्तिष्क के चेतन भाग का क्या कार्य है?
   iv. अवचेतन मस्तिष्क से क्या अभिप्राय है?
   v. लेखक अभिमन्यु के माध्यम से क्या प्रतिपादित करना चाहता है?

2. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   सवेरे हम अपनी मंजिल काठमांडू की ओर बढ़े। पहाड़ी खेतों में मक्के और अरहर की फसलें लहरा रही थीं। छोटे-छोटे गाँव और परकोटे वाले घर बहुत सुंदर लग रहे थे। शाम होते-होते हम काठमांडू पहुँच गए। आज काठमांडू पर लिखते हुए अंगुलियाँ काँप रही हैं। वैसे ही जैसे पच्चीस अप्रैल को काठमांडू की धरती काँप उठी थी। न्यूज चैनल जब धरहरा स्तंभ को भरभराकर गिरते दिखा रहे थे, मेरा मन बैठा जा रहा था। क्या हुआ होगा धरहरा के इर्दगिर्द फेरी लगाकर सामान बेचने वालों का? और उस बाँसुरी वादक का जिसके सुरों ने मन मोह लिया था और वे पर्यटक जो धरहरा के सौंदर्य में बिंधे

उसका सौंदर्य निहारते। सब कुछ जानते हुए भी मन यही कह रहा है कि सब ठीक हो।
रात को हम बाज़ार गए। बाज़ार इलेक्ट्रॉनिक सामानों से अटा पड़ा था और दुकानों की मालकिने मुस्तैदी से सामान बेच रही थीं। हमारे हिमालयी क्षेत्रों की तरह यहाँ भी अर्थव्यवस्था का आधार औरतें हैं। क्योंकि पहाड़ों पर पर्याप्त जमीन नहीं होती और रोजगार के साधन भी बहुत नहीं होते, सो घर के पुरुष नीचे मैदानी इलाकों में कमाने जाते हैं और घर-परिवार की सारी जिम्मेदारी महिलाएँ उठाती हैं। यहाँ गाँव की महिलाएँ खेती और शहर की महिलाएँ व्यवसाय सँभालती हैं। मैंने देखा वे बड़ी कुशलता से व्यावसायिक दाँव-पेंच अपना रही थीं। हम पोखरा होते हुए लौट रहे थे। रास्ते भर हिमाच्छादित चोटियाँ आँखमिचौली खेलती रहीं। राह में अनेक छोटे-बड़े नगर-गाँव और कस्बे आते रहे। नेपाली औरतें घरों में काम करती नजर आ रही थीं। मक्का कटकर घर आ चुकी थी। उसके गुच्छे घर के बाहर ख़ुटियों के सहारे लटके नजर आ रहे थे। अब हम काली नदी के साथ-साथ चल रहे थे।

i. लेखक की अंगुलियाँ क्यों काँप रहीं थीं?
ii. काठमांडू के बाजार की क्या विशेषता थी?
iii. लेखक दुःखी और हताश क्यों था?
iv. नेपाली अर्थव्यवस्था का आधार औरतें क्यों हैं?
v. काठमांडू से लौटते समय लेखक ने क्या देखा?

CBSE Test Paper 01
Ch-अपठित गद्यांश

Answer

1. i. अपनी बुद्धि -विवेक में सूक्ष्म परिवर्तन लाकर हम अपने स्वभाव को परिवर्तित कर सकते हैं।
   ii. हमारे मस्तिष्क के दो विभिन्न अंश होते हैं-चेतन और अवचेतन। दोनों ही अलग-अलग प्रयोजनों के लिए जिम्मेदार हैं। एक जाग्रत रहता है तो दूसरा सुषुप्तावस्था में रहता है।
   iii. मस्तिष्क का चेतन भाग हमें विशिष्ट बनाता है। इसकी वजह से एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से अलग होता है। हमारी कछ अलग-सा स्वभाव, अनोखी सृजनात्मक शक्ति, रचनात्मकता आदि कार्यों की जिम्मेदारी चेतन मस्तिष्क की ही होती है। यही चेतन मन एक को दूसरे से पृथक कर विशिष्ट बना देता है।
   iv. अवचेतन मस्तिष्क एक ताकतवर प्रतिश्रुति यंत्र के समान होता है। यह जीवन के प्रारम्भिक दिनों से लेकर अब तक के रिकॉर्ड किए अनुभवों को दोहराता है। इसमें रचनात्मकता नहीं होती। यह उन स्वचालित क्रियाओं और सहज स्वभाव को भी नियंत्रित करता है जो हमारी आदत बन चुका है।
   v. लेखक अभिमन्यु की चर्चा के माध्यम से यह प्रतिपादित करना चाहता है कि अवचेतन मस्तिष्क जन्म के थोड़े पहले माँ के पेट में ही सीखना शुरु कर देता है। उस समय उसे सही-गलत का ज्ञान नहीं होता केवल अपने स्वभाव के अनुसार आस-पास की गतिविधियों को ग्रहण कर लेता है जो बाद में उसके जीवन का आधार बन जाते हैं।
2. i. नेपाल में आए भूकंप की याद हो आने के कारण काठमांडू पर लिखने के लिए लेखक की अंगुलियाँ काँप रहीं थीं क्योंकि इस घटना ने उन्हें भावनात्मक स्तर पर हिला कर रख दिया था।
   ii. काठमांडू के बाज़ार इलेक्ट्रॉनिक सामानों से अटे पड़े थे और दुकानों की मालकिनें सतर्कता के साथ सामान बेचने का अपना कार्य कर रहीं थीं। वहाँ की औरतें बड़ी कुशलता से व्यावसायिक दाँव पेंच अपनाते हुए सामान का विक्रय कर रही थीं। फेरीवाले व अन्य अपना सामान घूम-घूमकर बेचते थे।
   iii. न्यूज चैनलों में जब काठमांडू के धरहरा स्तंभ को भरभराकर गिरते दिखाए जाने लगा तो लेखक धरहरा में मिले फेरी लगाकर सामान बेचनेवालों, मधुर बाँसुरी वादक और पर्यटकों के बारे में चिंता कर दुःखी और हताश हो गया। वह मन ही मन उनकी कुशलता के विषय में विचारने लगा।
   iv. नेपाल एक पहाड़ी इलाका है तथा वहाँ पहाड़ों पर पर्याप्त समतल ज़मीन नहीं होने से कृषि व अन्य रोजगार के साधन भी सीमित होते हैं जिसके कारण पुरुष नीचे मैदानी इलाकों में कमाने के लिए जाते हैं और घर परिवार की सारी ज़िम्मेदारी महिलाओं पर आ जाती हैं। गाँव की महिलाएँ खेती व शहरी महिलाएँ व्यवसाय सँभालती है।इस तरह हम कह सकते हैं कि औरतें ही नेपाली अर्थवयवस्था का आधार है।
   v. काठमांडू से लौटते समय लेखक ने रास्ते में बर्फ से ढँकी चोटियाँ, छोटे-बड़े नगर-गाँव और कस्बे देखे। घरों के बाहर कटी हुई मक्का की फसल के गुच्छे खूँटियों पर लटके देखे तथा राह में काली नदी बहती दिखाई दी।